पाठ २

ताई

STUDY NOTES

MIND MAP

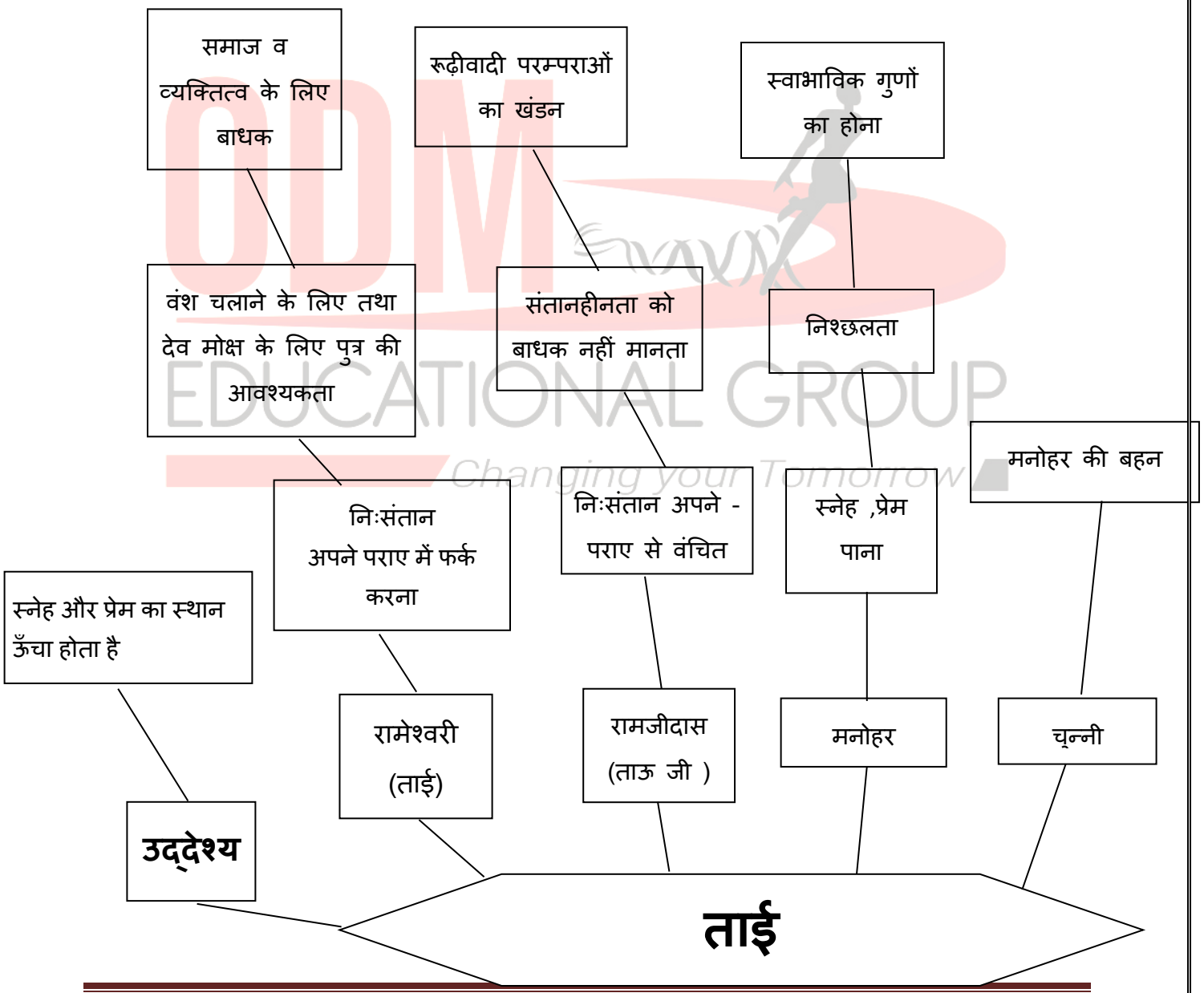

पाठ २

ताई

STUDY NOTES

पाठ प्रवेश

इस कहानी का मूलभाव यह है कि स्नेह व प्रेम का स्थान ऊँचा है। यह अपने - पराए की भावना से प्रभावित नहीं होता। बच्चे सभी के लिए समान होते हैं। उनमें निश्छलता होती है। उनका किसी से कोई स्वार्थ नहीं होता है। वे जो कुछ भी करते हैं स्वाभाविक गुणों के कारण करते हैं। बच्चे प्यार के भूखे होते है। उनके साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार करने से वे भी उसी प्रकार स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हैं। वास्तव में नन्हें - मुन्ने भगवान के स्वरूप होते हैं। यह मान लेना कि अपनी संतान ही प्यारी होती है। यह बहुत बड़ी भूल है। इस कहानी में इस बात को मर्मस्पर्शी तरीके से व्यक्त किया गया है।

पाठ का सार

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह बताया है कि किस प्रकार बच्चों के प्यार से कोई अपनी पुरानी धारणा को भूल जाता है। इस कहानी में बाबू रामजीदास की पत्नी श्रीमती रामेश्वरी देवी हैं। वह नि:संतान हैं। बाब रामजीदास अपने भाई कृष्णदास के पाँच वर्षीय पुत्र मनोहर को बहुत प्यार करते हैं। उसे प्राणों से भी प्यारा मानते हैं, पर श्रीमती रामेश्वरी देवी को यह सब बिलकुल अच्छा नहीं लगता, वह मनोहर को दूसरे का बेटा और पराया धन कहती हैं। उन्हें रामजीदास बार-बार समझाने का प्रयास करते हैं, परंतु रामेश्वरी देवी मनोहर को अपनी संतान की तरह मानने को तैयार नहीं होती। प्रेम की भाषा तो बच्चे भी अच्छी तरह समझते हैं। अपनी ताई रामेश्वरी देवी के व्यवहार से मनोहर भी खुश नहीं रहता है। वह हर बार अपनी मीठी बोली से रामेश्वरी देवी को खुश करने की कोशिश करता है। इतना सब होते हुए भी रामेश्वरी में एक माँ के सभी गुण विद्यमान थे। वह केवल इस बात से चिढ़ती थी कि अपनी संतान न होते हुए भी उसके पति मनोहर को प्राणों से अधिक मानते थे। किंतु एक ऐसी घटना घटती है जिसके बाद से रामेश्वरी देवी मनोहर और उसकी बहन चुन्नी दोनों को बहुत प्यार करने लगती हैंऔर वे दोनों रामेश्वरी के प्राणाधार बन जाते हैं।